श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ३

अगस्त - २०१९

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. क्षण में ज्ञानावरणीय का उदय तो दूसरे पल अंतराय कर्म का उदय, कर्म विपाक का चिंतन करना वह ..... धर्मध्यान है ।
२. धनश्रेष्ठि ने एक करोड की जायदाद के साथ कन्या देनी चाही पर ..... मोह में नहीं पडे ।
३. आहार प्राप्त करने हेतु रुप परिवर्तन आदि करे वो ..... कहलाता है ।
४. उत्तर वैक्रिय शरीर काल पूर्ण होने से पहले भी बुद्धि पूर्वक ..... किया जा सकता है ।
५. इस स्तवन को पढने और सुनने वाले तथा ..... के पापो का श्री पार्श्वनाथ प्रभु शमन करो ।
६. स्थावर का हुंडक संस्थान होने पर भी ..... विविध होते हैं ।
७. प्रसन्न हुए देव ने उन्हें ..... दी ।
८. मंद परिणामी आर्तध्यान ..... को भी हो सकता है ।
९. श्रावक और साधु दोनों के लिये ..... का विचार समान ही है ।
१०. बौद्ध राजा के राज्य में ..... महोत्सव से जैन शासन की प्रभावना कराई ।
११. अचित्त और सचित्त के आधार पर शास्त्र में ..... कही हुई है ।
१२. छठवें गुणस्थानक में पाँच प्रकार के प्रमाद होने से वह ..... है ।
१३. श्री पार्श्वनाथ प्रभु के आश्चर्यकारी माहात्म्य का वर्णन ..... स्तोत्र में करने में आया है ।
१४. पीला वर्ण और ज्यादा शांत परिणामी ..... है ।
१५. श्रावक के घर में ..... थी इसलिये वह तो लेने की ही नहीं थी ।
१६. पिता की दीक्षा की बात तुरंत सुनकर पुत्र को ..... हुआ ।
१७. कुमारपाल राजा अहिंसा प्रतिपालक बने आगे ..... बनकर मुक्तिपद के भोगी बनेगें ।
१८. देवगति में ..... एवं लोभ संज्ञा विशेष से होती है ।
१९. जिसमें खाने का कम फेंकने का ज्यादा हो वह ..... कहलाते है ।
२०. हिंसा, असत्य आदि में ..... जीव को आनंद होता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. किसकी नजर में चतुर्विध संघ पच्चीसवें तीर्थंकर स्वरुप होते हैं ?
२. भय का विनाश करने वाले पार्श्वप्रभु किसके द्वारा नमस्कार किये गये है ?
३. कितनी ही वस्तुएं हमारे उपयोग में नहीं आती फिर भी हम उसका त्याग क्यों नहीं कर पाते ?
४. वज्रस्वामी को किसलिये दुःख हुआ ?
५. सभी जीवों के सतत क्या बदलते रहते हैं ?
६. स्वजन के लिये बनाया आहार, स्वजन के नहीं लेने से साधु को देना कौनसा दोष कहलाता है ?
७. प्रत्याख्यानावरणीय कषाय के उदय से क्या ग्रहण करने का सत्व उत्पन्न नहीं होता ?
८. पार्श्वप्रभु का यह स्तवन भव्य जीव को किस परंपरा का मूल कारणरुप है ?
९. किन चक्षु से ज्ञानी भगवंतो ने हमें एकेन्द्रिय का आकार बताया है ?
१०. कैसी गोचरी साधु की आराधना में वृद्धि करने वाली बनती है ?
११. कैसा जीव चौथे गुणस्थान में रहते हुए भी देव-गुरुसंघ की सुन्दर भक्ति करता है ?
१२. सिर्फ तेजोलेश्या किन देवों को होती है ?
१३. वज्रस्वामी किस पर्वत से स्वर्ग में गये ?
१४. रथयात्रा, तीर्थयात्रा आदि अनोखे अनुष्ठानों को कहाँ स्थान प्रदान करना है ?
१५. अंकुरित यह क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) श्राद्ध २) नाह ३) सत्त ४) उवद्दवा ५) संथवं ६) असंघयणा ७) करोत्येव ८) उआरं ९) जस्स १०) विगलिंदि ११) उक्कोस
२) पयडं १३) पसमेउ १४) धर्म्य १५) रिक्ख १६) जुवइहिं १७) तीर्वोदये १८) निहाणं १९) ज्झाणाउ २०) गुणालये

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) आगम रुचि	१) लाल वर्ण	६) अमृतवेल	६) जृंभक देव
२) नपुंसक	२) भविक	७) सौभाग्य	७) मैथुन
३) आहार	३) गुडवेल	८) तेजोलेश्या	८) दायक दोष
४) उदार	४) गुरुभक्ति	९) वनीपक	९) सोपारक
५) इश्वरी	५) चिकित्सा	१०) अनिमेष दृष्टि	१०)संघभक्ति

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पाँचवे गुणस्थानक में कितनी प्रकृति की उदीरणा होती है ?
२. मनुष्य ने बनाया उत्तर वैक्रिय शरीर का काल कितना है ?
३. श्रावक और साधु जागृत न हो तो गोचरी के कितने दोष लगते हैं ?
४. पंचेन्द्रिय में कुल कितने दंडक आते हैं ?
५. वर्षा ऋतु में फरसाण का काल कितने दिन का है ?
६. चौथे गुणस्थानक में कितनी प्रकृति बंध में होती है ?
७. नमिउण स्तोत्र में महाप्रभावशाली कितने अक्षरों का मंत्र है ?
८. देशविरतिधर श्रावक कितने कर्तव्य की आराधना करने वाला होता है ?
९. श्रावक को कितने अभक्ष्य का त्याग करना चाहिये ?
१०. वैमानिक देवों को कितनी लेश्यायें होती है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. रावण राजा ने गुरुभक्ति से तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया ।
२. आरंभ समारंभ में लीन व्यक्ति के हाथों आहार ग्रहण करे तो उन्मिश्र दोष लगता है ।
३. गुरु ने उसमे बहुत भार होने से वज्र नाम रखा ।
४. आत्म परिणाम यह भावलेश्या है ।
५. किन्नरों के द्वारा स्तुति किये गये श्री पार्श्वप्रभु जय पाओ ।
६. वायुकाय में उत्तर वैक्रिय की रचना और विलय दोनों स्वयंमेव हो जाता है ।
७. जीव बारह प्रतिमादि के आलंबन से धर्मध्यान में आगे बढता है ।
८. श्रावक एवं साधु दोनों के लिये अभक्ष्य आदि का विचार समान ही है ।
९. अप्काय के जीव बुलबुले के आकार के होते है ।
१०. तिर्यंचो को भय और माया संज्ञा अधिक होती है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. इस जानकारी द्वारा हमारे जीवन में आहार शुद्धि लाकर ज्यादा पवित्रता बनाये रखने के लिये प्रयत्नशील बनते है ।
२. अब ऐसी प्रवृति में कोई आनंद नहीं आता ।
३. जिनका नाम श्री पार्श्वनाथ भी मंत्र समान है ।
४. द्रव्य लेश्या के पुद्गल विविध रंग के होते हैं ।
५. ज्योतिष निमित्त आदि कहकर आहार ले वो "निमित्त दोष" कहलाता है ।
६. उत्कृष्ट देशविरतिधर सचित्ताहार का त्यागी होता है ।
७. सब जीव चार कषाय वाले होते हैं ।
८. थोडा सा उपयोग रखा होता तो जरुर लाभ मिल जाता ।
९. उस समय चौथा संघयण और दश पूर्व विच्छेद पाये ।
१०. यह संसार अनादि काल से है उत्पत्ति, विनाश, ध्रौव्य भी है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. चतुर्थ स्थान में रहा हुआ जीव क्या करता है ?
२) वज्रस्वामी की दीक्षा ।
३. साधु के द्वारा लगते गौचरी के कोई छः दोष
४) संज्ञा द्वार समझाओ ।
५. नमिउण स्तोत्र का प्रभाव ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com